International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 386-387

समाजवाद का पाश्चत्य स्वरूप श्रमिक संघवाद

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

श्रम संघवाद का प्रादुर्भाव फ्रान्स की धरती पर हुआ। यह वह सामाजिक सिद्धान्त है जो श्रम संघों को समाज की आधारशिला बनाता है तथा श्रम संघों को उस समाज की प्राप्ति करने का साधन मानता है।१ श्रम संघवाद एक मजदूर आन्दोलन है। श्रम संघवाद का उद्देश्य एक ऐसी सामाजिक प्रणाली को विकसित करना है जिसमें पूंजीपति वर्ग के स्थान पर मजदूर सभाएं देश के उद्योगों पर अधिकारों की प्रतिस्थापना करेंगी, उनका प्रबन्धन करेंगी, उत्पादों के उपभोग को विनियमित करेंगी और समाज कल्याण को सुनिश्चित करेंगी।२

मार्क्सवाद से सादृश्यता प्रतिस्थापित करते हुए श्रमिक संघवाद राज्य को शक्तिशाली तथा अधिकार युक्त वर्ग के स्वार्थ का साधन मानता है। श्रमिक संघवाद के अनुसार सामाजिक संरचना की इकाई श्रम संगठन होगा। श्रम संघों का प्राथमिक कार्य श्रमिक वर्ग में चेतना का प्रसार करना है तथा इन्हें अपने संघ के हित एवं आदर्शों के प्रति समर्पित बनाना है३ इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए श्रमिकों को स्वयं सांगठनिक स्वरूप का परिनिर्माण करना चाहिए। ऐसा इसलिए कि राजनीतिक संस्थाएं स्वार्थ की भावभूमि पर आधारित हैं। प्रत्युत श्रम संघ समान भाव भूमि पर आधारित है। श्रम संघ में समस्त मजदूरों के वास्तविक एवं तात्विक हित एक समान है क्योंकि इनकी जीवन की अवस्था एवं शैली समान है अतएव इनकी व्यवहारिक सफलता अवश्यमभावी है। मजदूरों की राजनीतिक विचारधाराएं पृथक्क–पृथक्क हो सकती हैं परन्तु समस्त मजदूर वर्ग के आर्थिक हितों में समता पायी जाती है यही वह मुख्य कारक है जिसके आधार पर श्रमिक वर्ग औद्योगिक क्षेत्रा में स्वाभाविक रूप से संगठित हो जाते हैं। इसके विपरीत श्रमिक वर्ग राजनीतिक क्षेत्रा में संगठित नहीं हो सकते।४ श्रमिक एक साथ हड़ताल कर सकते हैं परन्तु समान मत व्यवहार नहीं कर सकते। श्रमिक संघ वादियों के अनुसार किस भी क्षेत्रा में राजनीतिक हथियार एक साधारण हथियार है। राजनीति को साधन बनाकर श्रमिक वर्ग संघर्ष का आह्वान तो कर सकता है परन्तु इसकी तार्किक परिणति व्यवस्था परिवर्तन के रूप में नहीं होगी क्योंकि इसमें सामूहिक संकल्प शक्ति का अभाव पाया जाता है।५

श्रम संघवादी जनतांत्रिाक प्रणाली का अनुसमर्थन नहीं करते हैं। जनतंत्रा में कार्यकारी राजनीतिक दलों में श्रम संघवादी आस्था नहीं रखते हैं। श्रम संघवादियों की यह दृढ़ आस्था थी कि वास्तविक लोकतंत्रा की आधारशिला वर्ग है।६ श्रम संघवादी युद्ध में अपनी आस्था नहीं व्यक्त करते हैं। श्रम संघवादियों के अनुसार विभिन्न देशों में पूंजीपतियों के हितों का परस्परव्यापी होना ही युद्ध का मूल कारक बनता है। पूंजीपतियों के हितों के कारण एक देश के मजदूर दूसरे देश के मजदूरों के विरुद्ध युद्ध की ज्वाला में होम कर दिये जाते हैं। प्रायः श्रमिक आन्दोलनों को दबाने के लिए युद्ध का प्रयोग किया जाता है। इसी को दृष्टिपथ में रखकर श्रम संघवादी उत्पादकों की शासन सत्ता की प्रतिस्थापना चाहते हैं। श्रमिक संघवादियों के अनुसार श्रमिक संघों का आधिपत्य समाज के केवल आर्थिक जीवन तक संकेन्द्रित नहीं होगा प्रत्युत जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा तक श्रमिक संघ की सत्ता का विस्तार होगा।७

श्रम संघवादियों की सर्वप्रमुख विशेषता है कि वह सीधी कार्यवाही में विश्वास व्यक्त करते हैं। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए श्रम संघवादी नीतिगत संघर्ष के साधन के रूप में मशीनों के ध्वंश, बहिष्कार, आम हड़ताल जैसे प्रभावी अस्त्रा का प्रयोग करते हैं। श्रम संघवादी इस धारणा में विश्वास व्यक्त करते हैं कि सीधी कार्यवाही के द्वारा श्रमिकों में चेतना का संचार किया जा सकता है तभी श्रमिक वर्ग अपनी दैन्य स्थिति का संज्ञान लेगा तथा भावी वर्ग युद्ध के लिए तैयार होगा। श्रम संघवादी किसी भी रूप में अपने लक्ष्य की प्राप्ति में वैधानिक साधनों के अनुप्रयोग में विश्वास नहीं रखते हैं। फ्रान्स में बहुधा यह हुआ है कि जब श्रमिक वर्ग ने अपने प्रतिनिधियों को जब–जब संसद में भेजा तब–तब वे वैधानिक साधनों के मध्यमार्गी नीति का अनुसमर्थन किये है जो सदैव श्रमिक हितों के प्रतिकूल थे। परिणाम स्वरूप फ्रान्स के श्रमिकों का राजनीतिक साधनों की विश्वसनीयता संदिग्ध लगने लगी। फलतः फ्रान्स के श्रमिकों में यह भावना बलवती होती गयी कि अपने ध्येय की प्राप्ति का एक मात्रा श्रेष्ठ तरीका सीधी कार्यवाही है। ८ सीधी कार्यवाही के सन्दर्भ में स्पष्टीकरण देते हुए श्रमिक संघवादियों का कहना है कि सीधी कार्यवाही का निहितार्थ मात्रा हिंसा नहीं है प्रत्युत अहिंसा भी हो सकती है। श्रमिक संघवादियों का उपर्युक्त सिद्धान्त तथा साधन उनकी गहरी चेतना तथा संकल्प शक्ति का परिचायक है।९

सीधी कार्यवाही के चार मुख्य तत्व है–

1. हड़ताल
2. बहिष्कार
3. लेबिल
4. मालहानि

इसमें हड़ताल प्रमुख साधन है। क्योंकि यह श्रमिकों और पूंजीपति वर्ग के मध्य अन्तरविरोधों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करता है तथा विरोध में गुणात्मक वृद्धि करता है। यह श्रमिक वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग क्रमशः दोनों को संगठित होने का अवसर प्रदान करता है। यह क्रान्ति का अमोघ अस्त्रा है।१०

श्रम संघवादियों का दूसरा सशक्त साधन मालहानि है। जिसकी वे सशक्त अनुशंसा करते हैं। इसके माध्यम से श्रमिक उत्पादन की निरन्तरता में व्यवधान लाते हैं परिणाम स्वरूप पूंजीपतियों की आर्थिक अपहानि तथा उनमें भय व्याप्त होता है। श्रम संघवादियों की हड़ताल की धारणा फ्रान्सीसी विचारक लुई ब्लांका से अनुप्राणित है। श्रम संघवादियों के विचार मौलिक रूप से मार्क्सवादियों से भिन्न है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज के विकास क्रम में वह समय आयेगा जब सर्वहारा स्वयं क्रान्ति करेगा। प्रत्युत श्रम संघवादियों की धारणा है कि मार्क्स के विचार आवश्यकता से अधिक सुखदायी है।

1901 के श्रम संघवादियों के अधिवेशन के पश्चात् श्रम संघवादी विचारकों से प्रश्न किया गया कि आप अपने विचारानुसार किस प्रकार की सामाजिक प्रणाली का परिनिर्माण करना चाहते हैं? प्रतिउत्तर में इन समाजवादी विचारकों का कहना था कि ''मजदूर सभा'' नवीन सामाजिक प्रणाली की इकाई होगी। स्थानीय स्तर के व्यापार तथा उत्पादन पर स्थानीय सिन्डीकेट (श्रम संघ) का प्राधिकार होगा, राष्ट्रीय परिसम्पत्ति पर प्राधिकार किसी विशेष सिन्डीकेट का नहीं होगा, वह राष्ट्रीय सिन्डीकेट के निर्देशानुसार कार्य करेगा।११

एक स्थान पर जितने व्यवसाय होंगे उतने सिन्डीकेटों की प्रतिस्थापना होगी। इस सबका एक संयुक्त रूप होगा जिसे श्रम संघ कहा जायेगा। आर्थिक क्षेत्रा के समस्त आंकड़ों को एकत्रित करने का कार्य श्रम संघ द्वारा किया जायेगा। यह वर्तमान राष्ट्र की केन्द्रित प्रणाली का विनाश कर देगा और उद्योग–धन्धों के केन्द्रीकरण पर प्रतिबन्ध लग जायेगा।१२

स्थानीय श्रम संघ, राष्ट्रीय श्रम संघ के सदस्य होंगे। सिन्डीकेट का राष्ट्रीय श्रम संघ का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होगा। यह सम्बन्ध श्रम संघों के माध्यम से होगा। राष्ट्रीय श्रम संघ राष्ट्रीय उत्पाद पर आधारित होगा। राष्ट्रीय श्रम संघ का स्थानीय श्रम संघों पर अधिकार नहीं होगा। इनका कार्य केवल सामान्य सूचना प्राप्त करना तथा नियन्त्राण शक्ति का अनुप्रयोग है। इस प्रकार श्रम संघवाद के पक्ष पोषक प्रजातंत्रा की आवश्यकता नहीं समझते। श्रम संघवादियों के अनुसार उनके द्वारा प्रतिस्थापित भावी समाज में स्थानीय एवं केन्द्रीय प्रशासन तो अवश्य रहेगा परन्तु प्रशासन यंत्रावत कार्य नहीं करेगा प्रत्युत इसकी कार्यप्रणाली मानवीय होगी।

इस प्रकार शान्तिपरक सुधारवादी समाजवाद तथा क्रान्तिकारी वैज्ञानिक समाजवाद की मार्क्सवादी धारणा से पृथक्क श्रम संघवादियों ने राज्य पर नियन्त्राण की प्रतिस्थापना एवं व्यवस्था परिवर्तन की नवीन विचारधारा प्रस्तुत की। यद्यपि श्रमिक संघवादियों ने किसी नवीन दर्शन का प्रणयन नहीं किया परन्तु समाजवाद की प्रतिस्थापना में साधन की नवीनता का दर्शन अवश्यमेव हुआ। परन्तु साधनों की नवीनता के उपरान्त भी इस विचारधारा का व्यापक विकास नहीं हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त श्रम संघवाद अत्यन्त मन्द पड़ गया। यह विचारधारा इतनी सैद्धान्तिक तथा तर्क से परिपूर्ण थी कि साधारण जन मानस इसे सहज रूप से ग्राह्य नहीं बना सका। इस मध्य फेबियन समाजवाद (उदार समाजवाद) तथा श्रम संघवाद के मध्यवर्ती एक नवीन विचारधारा गिल्ड समाजवाद का प्रादुर्भाव हुआ जो अपनी पूर्ववर्ती दोनों विचारधाराओं की ऋणी है।१३

सन्दर्भ

1. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी ऍम जोडआक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लन्दन १६५८
2. सिण्डीकेलिज्म इन फ्रान्स : एल0 लेनिन, द्वितीय संस्करण यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 125।
3. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 126.127।
4. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 135।
5. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल रिस्टेटेड पब्लिशर्स लन्दन, 1920ए पृष्ठ संख्या 41।
6. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 42।
7. समाजवाद : डॉ0 सम्पूर्णानन्द, भारतीय ज्ञान पीठ, वाराणसी, पंचम संस्करण, संवत 2002ए पृष्ठ संख्या 295।
8. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल, पृष्ठ संख्या 183. 187।
9. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 ई0 एम0 जोड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 54।
10. रिसेन्ट पोलिटिकल थाट : एफ0 डब्लू0 कोकर एपलीएनशन सेनचुरी प्रेस, न्यूयार्क 1964ए पृष्ठ संख्या 565। उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 555।
11. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 555।
12. राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : डॉ0 बीरकेश्वर प्रसाद सिंह, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994 ए पृष्ठ संख्या 270।
13. आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : जगदीश चन्द्र जौहरी, सीमा जौहरी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1999ए पृष्ठ संख्या 565।
14. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 एम0 जोड आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 93।